SPIRITUAL TEACHING AND BACKGROUND OF POOJYA SHREE BHAI JI

By
Namrata Padaki

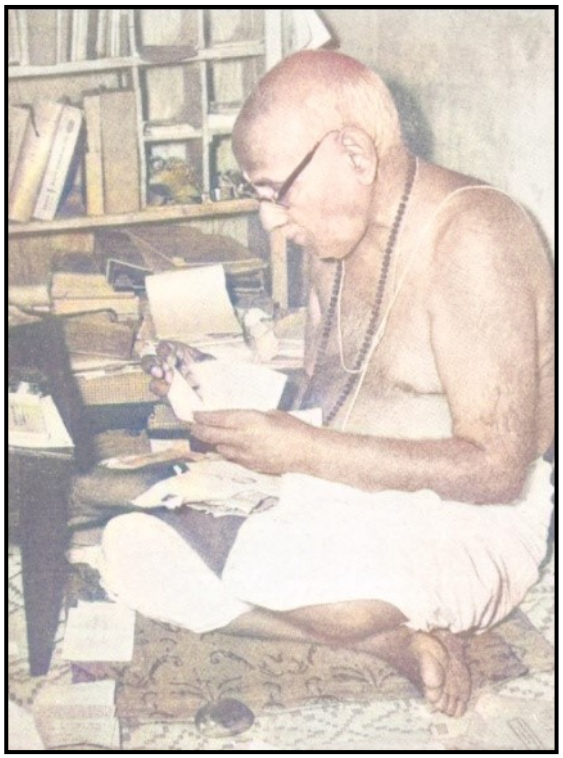

Poojya Shree Bhai Ji was born on 17th September 1892 in Shillong. He was born for fulfilling a specific purpose of enlightening the general masses and for spreading the knowledge about love of God and how it can be attained. Without his colossal efforts, goodness, generosity, spirit of service and dedication, the common man, the lay man would never have got access to the path of devotion towards God. Bhai Ji was engaged in his family business and in one of the incidents during his visit to Bombay for business purposes around 1925; he was doing his 'japa' sitting on a bench on the sea shore of Chowpatty. He saw a spirit of a Parsee gentleman who had died recently and was waiting to speak to him and spoke to him only after Bhai Ji initiated the conversation. The spirit wanted to be relieved of his condition and requested Bhai Ji to send a Brahmana to Gaya to perform 'Pinda daan' for getting rid of his plight. After the 'Pinda daan' was offered, the spirit of the Parsee gentleman expressed his gratitude to Bhai Ji. The supremacy of Sanatan dharma and the ultimate dharma to follow for emancipation and salvation of souls can be gauged from this episode.

पूज्य श्री भाईजी का जन्म 17 सितंबर 1892 को शिलांग में हुआ था। उनका जन्म एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ था। उद्देश्य था जनमानस को जागरूक करना, उन्हें ईश्वरीय प्रेम और उसे प्राप्त करने का मार्ग बताना। उनके महान प्रयास, सद्गुणों, उदारता, सेवा-भाव और समर्पण के बिना साधारण मनुष्य कभी भी भक्ति मार्ग तक नहीं पहुँच पाता। एक बार की बात है, भाईजी अपने पारिवारिक व्यापार में व्यस्त थे और 1925 के आसपास, इसी सिलसिले में वे बंबई गए । वहां, एक दिन वे चौपाटी में समंदर किनारे एक बेंच पर बैठे जाप कर रहे थे। तभी उन्होंने एक पारसी व्यक्ति की आत्मा देखी, जिसकी मृत्यु हाल ही में हुई थी । वह उनसे बात करना चाहती थी। भाईजी द्वारा बातचीत शुरू करने के बाद ही उस आत्मा ने उनसे बात की । उस व्यक्ति की आत्मा अपनी इस अवस्था से मुक्ति चाहती थी और उसने भाईजी से गया में किसी ब्राह्मण को भेजकर अपने उद्धार हेतु पिंडदान करवाने की विनती की। जब पिंडदान संपन्न हुआ, तो उस पारसी भलेमानुष की आत्मा ने भाईजी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। यह घटना आत्माओं की मुक्ति व मोक्ष के लिए, सनातन धर्म की महिमा दर्शाती है।

Poojya Bhai Ji Maharaj used to have confidential divine discussions with Poojya Seth Ji Jaydayal Goyandka Ji and others which give us very valuable and divine inspiration to follow the path of Bhagvad Bhakti. In Bhai Ji 's own words, he says that there should be a deep thirst and longing for having a glimpse or Darshan of the Lord. One has to develop a great desire and greed for meeting God and perform deep sadhana for the same. One has to practice sadhana for release from the ocean of material existence and consider the lotus feet of God as a strong boat for crossing the ocean. The yearning for God is akin to a fish who gasps for breath when out of water and the joy in returning back to the water. But without knowing the greatness of God, we can never surrender to Him. God is pervading in each and every atom of existence. Satsang or meeting of godly people, saints and mahatmas is the easiest way to contemplate on

God and develop devotion and thirst for uplifting our souls. Bhai Ji once said that chanting of the mantra - *'Om Kleem Shree Radhakrishnabhyaam Namaha'* if chanted with total faith and devotion all the time can open a portal to divine pastimes of Shree Shree Radha Krishna and it may even be possible to communicate with them. But grace may shine only after a long practice of ' Ekant bhajan ' or bhajan in seclusion. Focus on God and not on objects of the fleeting material desires. Change of focus can lead to the path of divine bliss.

पूज्य भाईजी महाराज अक्सर पूज्य सेठ जी जयदयाल गोयंदका जी और अन्य महानुभावों के साथ गुप्त दिव्य चर्चाएं किया करते थे। इस चर्चाओं में हमें भगवद् भक्ति मार्ग पर चलने की अत्यंत मूल्यवान प्रेरणा मिलती है । भाईजी ने बताया कि मनुष्य में ईश्वर की एक झलक पाने की तीव्र लालसा होनी चाहिए। इस प्रबल इच्छा व लालसा को उत्पन्न करने के लिए गहन साधना आवश्यक है। भौतिक संसार रुपी सागर से मुक्ति पाने के लिए साधना करनी होगी, और इस सागर को पार करने के लिए हमें ईश्वर के चरण कमलों को एक सुदृढ़ नाव के रूप में देखना होगा। ईश्वर से मिलने की लालसा ठीक वैसी ही है, जैसी एक मछली की होती है जब वो पानी से बाहर होने पर श्वास लेने के लिए छटपटाती है और पानी में वापस जाने पर प्रसन्न हो जाती है। लेकिन ईश्वर की महानता को जाने बिना, उनके प्रति समर्पण संभव नहीं है। ईश्वर तो कण-कण में विराजमान हैं। उनकी भक्ति और चिंतन करने के लिए, और हमारे आत्मा के उत्थान के लिए, एक बहुत ही सरल उपाय है। ये है सत्संग करना या धार्मिक व्यक्तियों, संतों और महात्माओं के सान्निध्य में रहना । भाईजी ने एक बार कहा था कि '**ॐ क्लीं श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः**' के मंत्र का जाप, यदि पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ निरंतर किया जाए, तो यह श्री श्री राधाकृष्ण की दिव्य लीलाओं के द्वार खोल सकता है। यहां तक कि उनके साथ संवाद करना भी संभव हो सकता है। लेकिन कृपा केवल तब ही प्राप्त हो सकती है जब 'एकांत भजन' या एकांत में भजन करने का लंबा अभ्यास किया जाए। इसलिए ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करें, न कि क्षणभंगुर भौतिक इच्छाओं पर। ऐसा करने से हमें दिव्य आनंद मार्ग की प्राप्ति हो सकती है।

The desire to follow a spiritual path by letting go of materialistic desires and enjoyments arises in a very few blessed souls. Pooja Bhai Ji explains in his Satsangs that even though the mind is filled with vices like malice, avarice, jealousy, negative thoughts and emotions - one should follow the instructions of devotees and try to inculcate the values of truthfulness, honesty, faithfulness in following the religious practices which will eventually lead to an inner transformation. One should be very particular about following these practices routinely. When the senses are engaged in worship, the mind will follow suit. Understanding the highest truth and the means to attain it is the beginning of soul cleansing for following the path of attaining love for God. Stick to daily oracles of chanting the Mahamantra, reading scriptures and gathering knowledge so that the mind does not wander into spaces where it can get misleaded and degraded. Regular spiritual practice is the key to spiritual advancement. Replying to the various queries of great personalities like Poojya swami Ramsukhdas Ji and others, Poojya Bhai Ji spoke about the importance of ' Shraddha' or total faith in one's Guru, sadhana and in the teachings of Sant Mahatmas for soul cleansing for sadhakas for advancing on the spiritual path.

बहुत ही कम सौभाग्यशाली आत्माओं में, भौतिक इच्छाओं और भोग-विलास का त्याग करके, आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की इच्छा पैदा होती है। पूज्य भाईजी अपने सत्संगों में बताते हैं कि मन में कई विकारों जैसे द्वेष, लोभ, ईर्ष्या, नकारात्मक विचारों और भावनाओं के बावजूद, हमें भक्तों के निर्देशों का पालन करना चाहिए। साथ ही हमें धार्मिक क्रियाओं में सत्यता, ईमानदारी, और विश्वास जैसे गुणों को आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। यह अंततः हमें आंतरिक परिवर्तन की ओर ले जाता है। इन आचरणों का नियमित रूप से पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है। जब इन्द्रियाँ आराधना में होती हैं, तो मन भी उन्ही का अनुसरण करता है। परम सत्य को समझना और उसे प्राप्त करने के साधनों का ज्ञान अर्जित करना, ईश्वर के प्रति प्रेम के मार्ग पर चलने के लिए, आत्मा की शुद्धि का प्रारम्भ है। महामंत्र के जाप, शास्त्रों के पठन, और ज्ञान प्राप्ति के दैनिक अनुष्ठान पर ध्यान दें, ताकि मन उन जगहों पर न भटके जहां वो भ्रमित और विकृत हो सकता है। नियमित आध्यात्मिक अभ्यास ही आध्यात्मिक उन्नति की कुंजी है। पूज्य स्वामी रामसुखदास जी और अन्य महान लोगों के विभिन्न प्रश्नों का उत्तर देते हुए, पूज्य भाई जी ने 'श्रद्धा' या गुरु, साधना और संत महात्माओं के उपदेशों में पूर्ण विश्वास के महत्व के बारे में बताया। यह साधकों के लिए आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है।

All the pravachans of Bhai Ji are actually a treasure trove for sadhakas and for anyone who is seriously trying to find the right path of approaching God. He also stressed on ' Ekant bhajan ' for contemplating on God and always remembering God and never doubting His existence or forgetting Him ever. One should keep practicing ' smaran ' or constant remembrance of God while working and going through the daily grind. Mahatma Gandhi, Pandit Madan Mohan Malviya Ji and other political leaders held Bhai Ji in great esteem. During discussions and pravachans on various topics ranging from the basics of the beginning of the journey on the spiritual path to developing interest, longing and yearning of the individual towards God as the highest goal of life, Poojya Bhai Ji has given innumerable and valuable information about how to approach God and multiple ways to achieve darshan, attachment and love of Godhead. All the emotions including love, hatred, greed, attachment, ego, pride, anger and attachment should be directed towards God only and not with anyone else because He is the closest friend and benefactor of the jeeva. Any type of attachment with God will lead to dissolving of one's ego and development of faith, love and dependence on God as the one and only benefactor and well-wisher of the jeeva. All types of dependence on others will lead to karmic bondage.

भाई जी के सभी प्रवचन, वास्तव में साधकों के लिए एक अमूल्य निधि हैं। साथ ही, ये सभी प्रवचन, उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनमोल हैं, जो सच्चे हृदय से ईश्वर तक पहुँचने के सही मार्ग को ढूंढने का प्रयास कर रहा है । उन्होंने ईश्वर का चिंतन करने, उन्हें हमेशा याद करने, और कभी भी उनके अस्तित्व पर संदेह न करने, या उन्हें न भुलाने के लिए भी 'एकांत भजन' पर विशेष रूप से बल दिया। भाई जी ने बताया कि काम करते हुए या अपने दैनिक जीवन के संघर्षों के बीच भी हमेशा ईश्वर का निरंतर चिंतन करना चाहिए । महात्मा गांधी, पंडित मदन मोहन मालवीय जी और अन्य राजनीतिक नेता भाईजी का बहुत सम्मान करते थे। आध्यात्मिक मार्ग पर यात्रा शुरु करने की मूल बातों से लेकर जीवन के उच्चतम लक्ष्य, यानी ईश्वर को प्राप्त करने की रुचि, लालसा और इच्छा जगाने तक विभिन्न विषयों पर चर्चाएँ करते और प्रवचन देते हुए, पूज्य भाई जी ने अनगिनत और अमूल्य जानकारियां दी हैं- जैसे ईश्वर के पास कैसे पहुँचा जाए और उनके दर्शन,

उनके प्रति लगाव और उनका प्रेम प्राप्त करने के कौन-कौन से उपाय हैं। सभी भावनाएँ, जैसे प्रेम, द्वेष, लालच, लगाव, अहंकार, घमंड, क्रोध, और आसक्ति, केवल ईश्वर के प्रति ही होनी चाहिए, न कि किसी और के प्रति। ऐसा इसलिए क्योंकि बस वही जीवात्मा के सबसे अभिन्न मित्र और शुभचिंतक हैं। ईश्वर के प्रति किसी भी प्रकार की आसक्ति से अहंकार का नाश होता है और जीव के एकमात्र शुभचिंतक यानि ईश्वर के प्रति विश्वास, प्रेम, और निर्भरता बढ़ती है। इसके विपरीत, दूसरों पर किसी भी प्रकार की निर्भरता हमें कर्म बंधन की ओर ले जाती है।

The discussions between Bhai Ji and personalities like Poojya Shree Radha Baba, Seth Ji Shree Jaydayal Goyandka Ji, Shree Chimanlal Goswami Ji and other Antarang sadhakas are very spiritual in nature and can be comprehended only by someone who really wants to follow the path described and prescribed by him as visualised by him and visitations and instructions by divine personalities, rishis, mahatmas and saints. Whatever he had directly received from God could not be freely distributed without His permission. Divya leelas (divine pastimes of God) can be made known to others only if He wills it. God' s ways are mysterious and ethereal. Even Brahma Ji, Lord Shiva, Shree Narad Muni, Bhishma Pitamaha and Shukdev Goswami are bewildered and even the Vedas cannot describe His personality. Constant remember ended of God, Gurus, Maha purushas is the key to ' Mukti ' or salvation. It is a lifetime of preparation. If the mind and senses are always entangled in material pursuits, it will lead to a dangerous position for the jeeva as the path to ‘Paramartha’ or highest and greatest good will be blocked.

भाई जी, पूज्य श्री राधा बाबा, सेठ जी श्री जयदयाल गोयंदका जी, श्री चिमनलाल गोस्वामी जी, तथा अन्य अंतरंग साधकों के बीच की चर्चाएँ अत्यंत आध्यात्मिक होती थीं। इन्हें केवल वही व्यक्ति समझ सकता है, जो वास्तव में उनके द्वारा वर्णित, निर्धारित और दिखाए गए मार्ग को अपनाना चाहता है। ये मार्ग उन्होंने अपने दिव्य अनुभवों और दिव्य विभूतियों, ऋषि-मुनियों, महात्माओं और संतों द्वारा दिए गए दर्शन और निर्देशों से प्राप्त किया था। उन्हें जो भी सीधे ईश्वर से प्राप्त हुआ था, वे उसे बिना उनकी अनुमति के स्वतंत्र रूप से वितरित नहीं कर सकते थे। जब ईश्वर की इच्छा होगी, केवल तभी उनकी दिव्य लीलाओं के बारे में दूसरों को बताना संभव है। ईश्वर के तरीके रहस्यमय और अलौकिक हैं। यहां तक कि ब्रह्माजी, भगवान शिव, श्री नारद मुनि, भीष्म पितामह, और शुकदेव गोस्वामी भी चकित हैं और वेद भी उनके व्यक्तित्व का सही वर्णन करने में असमर्थ हैं। ईश्वर, गुरु और महापुरुषों का निरंतर स्मरण ही ‘मुक्ति’ या मोक्ष की कुंजी है। इसके लिए जीवनभर निरंतर प्रयास करना होता है। यदि मन और इंद्रियाँ हमेशा भौतिक कामों में उलझी रहेंगी, तो इससे जीवात्मा के लिए एक खतरनाक स्थिति पैदा हो जाएगी, क्योंकि परमार्थ यानी महानतम कल्याण का मार्ग अवरुद्ध हो जाएगा।

Sadhakas should wake up in Brahma muhurat and try ekaant Dayan or meditation for communion with God. Dhyaan is recommended by focus sing the ' Chitta ' on the lotus feet of the Lord initially. As the mind starts to remember the lotus feet of the Lord, the focus can shift slowly to his ' Pitambar ' and ultimately to his lotus face. It is a gradual progression and the mind and senses are attached to ' Roop Dhyaan ' and the mind will not get attached anywhere

else. Whatever work one does should be dedicated to the lotus feet of Lord Krishna for avoiding vices like pride, ego, jealousy and competition.

साधकों को ब्रह्म मुहूर्त में जागकर, एकांत ध्यान या ईश्वर से साक्षात्कार हेतु साधना करने का प्रयास करना चाहिए। ध्यान के लिए प्रारंभ में 'चित्त' को ईश्वर के कमल चरणों पर केंद्रित करने की सलाह दी जाती है। जैसे-जैसे मन, ईश्वर के चरण कमलों का ध्यान करने में लगने लगता है, उसे धीरे-धीरे उनके 'पीतांबर' यानी पीले रंग के वस्त्रों और अंततः उनके कमल जैसे मुख पर केंद्रित किया जा सकता है। यह एक क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें मन और इंद्रियाँ 'रूप ध्यान' में जुड़ जाती हैं और फिर कहीं और नहीं भटकतीं। जो भी कार्य किया जाए, उसे भगवान श्रीकृष्ण के चरण कमलों में समर्पित करना चाहिए, ताकि अभिमान, अहंकार, ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा जैसे विकारों से बचा जा सके।

Shree Shukdev Ji wished for Darshan of Lord Krishna and Poojya Bhai Ji said that it could be possible the next day. He spent the whole day in anticipation and the next morning, he was in total ecstasy as he was witnessing divine scenes. Some of the spectators were impressed and others felt that it was just a show off. Bhai Ji said in front of everyone that whatever Shukdev Ji was experiencing should stop immediately and it stopped immediately after. Not everyone has total faith and surrender towards God and saints and it is best to keep ' sadhana ' a secret.

श्री शुकदेव जी ने भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन की इच्छा व्यक्त की, और पूज्य भाईजी ने कहा कि अगले दिन यह संभव हो सकता है। उन्होंने पूरे दिन उस क्षण की प्रतीक्षा में बिताया और अगली सुबह, वे परम आनंद में डूब गए क्योंकि वे दिव्य दृश्य देख रहे थे। कुछ दर्शक इससे प्रभावित हुए, जबकि अन्य ने इसे मात्र दिखावा माना। भाईजी ने सबके सामने कहा कि शुकदेव जी जो भी अनुभव कर रहे हैं, वह तुरंत रुक जाए, और वो उसी क्षण समाप्त हो गया। हर किसी में ईश्वर और संतों के प्रति पूर्ण श्रद्धा और समर्पण नहीं होती। इसलिए 'साधना' को गुप्त रखना ही सर्वोत्तम है।

Darshan of God may be possible if you have a deep innermost desire with total faith that you will get ' kripa ' or benediction one day. Divine fragrance, the sound of the anklets, sweet music of the flute and illumination and blinding light was experienced as Bhai Ji went on describing the appearance and nature of God. Lord Krishna exists everywhere in each and every atom of existence. All the universes and the entire sentient and non-sentient existence is his play or ' leela ' only. So as one advances in dhyaan or ' leela dhyaan ', his pastimes, his abode, his saints and his Dhaam, one can experience God personally and worship him in any personal relationship like we form with other jeevas in the material existence.

ईश्वर के दर्शन तभी संभव हो सकते हैं, जब आपके भीतर इसकी गहरी इच्छा हो, इस अटल विश्वास के साथ, कि एक दिन आपको उनकी कृपा अवश्य प्राप्त होगी। जैसे-जैसे भाईजी ने ईश्वर के स्वरूप और उनकी दिव्यता का वर्णन करते गए, लोगों ने दिव्य सुगंध, पायल की ध्वनि, बांसुरी की मधुर तान, और चकाचौंध कर देने वाली रोशनी को अनुभव किया। भगवान श्रीकृष्ण कण-कण में व्याप्त हैं। सभी ब्रह्मांड और समस्त चेतन-अचेतन सृष्टि, उनकी लीला मात्र है। इसलिए जैसे-जैसे

साधक उनके 'लीला ध्यान' अर्थात उनकी लीलाओं, उनके निवास स्थान, उनके संतों और उनके धाम के बारे में अधिक सोचता है, तो उसे ईश्वर का व्यक्तिगत रूप से अनुभव होता है। फिर जैसे हम भौतिक जीवन में अन्य जीवों के साथ संबंध बनाते हैं, वह भी ईश्वर के साथ कोई भी व्यक्तिगत संबंध स्थापित करके उनकी पूजा कर सकता है।

Shree Ganga Prasad Ji Agrawal used to work for Gita Press and accepted only food and clothing as his remuneration. He was a sadhaka. He enquired from Poojya Bhai Ji Maharaj about the path of sadhana suitable for him. Bhai Ji advised him to read the life histories and biographies of saints and bhaktas or devotees of God every day after working hours. He also advised bhajan and meditation and to keep praying to God with humility and devotion. Whatever advice and guidance Poojya Bhai Ji used to give others for progression in sadhana should be followed by all sadhakas for their highest and greatest good in this age of Kali.

श्री गंगाप्रसाद जी अग्रवाल गीता प्रेस में कार्यरत थे और अपने पारिश्रमिक के रूप में केवल भोजन और वस्त्र स्वीकार करते थे। वे एक साधक थे। उन्होंने पूज्य भाईजी महाराज से अपने लिए उपयुक्त साधना का मार्ग पूछा। भाईजी ने उन्हें सलाह दी कि वे अपने प्रतिदिन काम के बाद, संतों और भक्तों की जीवन गाथाओं और आत्मकथाओं का अध्ययन करें। साथ ही, उन्होंने भजन और समाधी करने तथा विनम्रता और भक्ति के साथ, उन्हें ईश्वर की प्रार्थना करते रहने की भी सलाह दी। साधना में प्रगति के लिए, पूज्य भाईजी दूसरों को जो भी निर्देश और मार्गदर्शन दिया करते हैं, उनका पालन सभी साधकों को करना चाहिए। यह कलियुग में उनके सर्वोच्च और परम कल्याण के लिए आवश्यक है।

Many sadhakas and other people had benefited from his pravachans and Satsangs. Lord Krishna used to be personally present to bless the devotees. They experienced the bliss of contemplating God through meditation and mental worship due to the grace of such a great devotee. Once Bhai Ji conducted a guided meditation for a group of sadhakas and later guided them for performing mental worship. Everyone praised Krishna and sang the Stuti. Lord Krishna was personally present during the whole exercise and disappeared after some time. Then Bhai Ji touched the floor where Krishna was standing and applied the dust to his head. Everyone was in ecstasy. Normally while trying to meditate and contemplate on God, one feels sleepy and lethargic due to lack of interest due to lack of proper guidance. But because of grace of Bhai Ji and blessings of Lord Krishna, the sadhakas could experience bliss of dhyaan and mansik or mental pooja. Not every sadhaka can devote their whole and soul in their sadhana due to various factors including the troubles and challenges of material existence.

अनेक साधकों और लोगों ने उनके प्रवचनों और सत्संगों से लाभ प्राप्त किया। भगवान श्री कृष्ण स्वयं भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित रहते थे। ऐसे महान भक्त की कृपा के कारण, इन लोगों को साधना और मानस पूजा के माध्यम से ईश्वर की भक्ति करने का आनंद प्राप्त हुआ। एक बार भाईजी ने साधकों के एक समूह के लिए मार्गदर्शित साधना का संचालन किया, और बाद में मानस पूजा करने में उनका मार्गनिर्देशन किया। सभी ने श्रीकृष्ण की स्तुति की और उनके

गुण गाए। ध्यान और पूजा के इस पूरे क्रम के दौरान, भगवान श्रीकृष्ण स्वयं उपस्थित रहे और कुछ समय बाद, अंतर्ध्यान हो गए। उसके बाद, भाईजी ने उस स्थान को स्पर्श किया जहाँ भगवान श्रीकृष्ण खड़े थे, और उस धूल को अपने मस्तक पर लगाया। सभी साधक आनंदमग्न थे । साधारणतः जब कोई ईश्वर का चिंतन करने का प्रयास करता है, तो मार्गदर्शन की कमी के कारण वह आलस्य और उदासीनता अनुभव करता है। लेकिन भाईजी की कृपा और भगवान श्रीकृष्ण के आशीर्वाद के कारण, साधकों ने ध्यान और मानस पूजा का अद्‌भुत आनंद प्राप्त किया। प्रत्येक साधक अपने हृदय और आत्मा को पूरी तरह से अपनी साधना में समर्पित नहीं कर सकता। इसके कई कारण होते हैं जिनमें भौतिक जीवन की परेशानियाँ और चुनौतियाँ शामिल हैं।

It is very difficult to balance material and spiritual lives. So one has to stick to one's sadhana diligently and wait for Guru kripa and Bhagvad kripa to fructify. Shree Gambhirchand Dujari Ji had a lengthy discussion with Poojya Bhai Ji on various topics which provide a very valuable insight into what should be done and what should be avoided for getting success in one's endeavours to acquire Bhagvad Darshan, Bhagavad prem and seva or service towards God. Bhai Ji said that he had a very strong wish for spiritual progression of sadhakas, but it was beyond his capacity because he could not give it to anyone without divine permission. Entry into the divine leelas is not possible for anyone without the will of God. If the sadhaka is not yet eligible or if his sadhana has not reached the pinnacle, it is not possible for entry into these leelas. Poojya Bhai Ji could not reveal them to anyone. He guided the sadhakas in their path towards Bhakti. Though Poojya Bhai Ji was empowered by Lord Krishna to know the highest truth, he was perhaps prohibited from dispersing the mysterious spiritual knowledge freely by the divinity.

भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में संतुलन बनाये रखना बहुत कठिन है। इसलिए साधक को अपनी साधना पर पूर्णरूप से ध्यान केंद्रित करके, गुरु कृपा और भगवत कृपा के फलित होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। श्री गंभीरचंद दूजारी जी ने पूज्य भाई जी के साथ कई विषयों पर एक लंबी चर्चा की। इस चर्चा से यह मूल्यवान दृष्टिकोण मिला मिला कि भगवत दर्शन, भगवत प्रेम और भगवान के प्रति सेवा करने के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए और क्या करने से उसे बचना चाहिए। भाई जी ने कहा था कि उनकी बड़ी इच्छा है कि साधकों की आध्यात्मिक प्रगति हो। लेकिन यह उनके सामर्थ्य से बाहर की बात थी क्योंकि बिना ईश्वरीय अनुमति के, वे इसे किसी को दे नहीं सकते । ईश्वर की इच्छा के बिना दिव्य लीलाओं में प्रवेश करना असंभव है। यदि साधक अभी भी योग्य नहीं है, या उसकी साधना अपने उच्चतम शिखर तक नहीं पहुंची है, तो इन लीलाओं में प्रवेश करना संभव नहीं है। पूज्य भाई जी इन्हें किसी को भी प्रकट नहीं कर सकते थे। उन्होंने साधकों को भक्ति के मार्ग पर मार्गदर्शन किया। पूज्य भाई जी को भगवान कृष्ण द्वारा परम सत्य को जानने की शक्ति दी गई थी। लेकिन शायद दिव्यता द्वारा उन्हें इस रहस्यमय आध्यात्मिक ज्ञान को दूसरों में बांटने से प्रतिबंधित किया गया ।

Chimanlal Ji Goswami was a great scholar in Sanskrit, English and Hindi literature and works and well versed in these languages. He had left his job in the royal court of Bikaner and came to work in the editorial department of Gita press. Goswami Ji and others requested Bhai Ji on a Sharad Purnima day for a discussion on the topic of Madhurya Prem Ras or sweet conjugal

affairs of Shree Krishna. Bhai Ji replied that even though he possessed the power of entering leelas, it was beyond his capacity to transfer it to others. So it is important that sadhakas should gradually spend more time in ekant sadhana for improving their merits and not directly jump to of aspire for Darshan of God. He asked people to keep total faith in the ' kripa ' or ben-ediction of God and keep on chanting the names of God.

चिमनलाल जी गोस्वामी संस्कृत, अंग्रेजी और हिंदी साहित्य के एक महान विद्वान थे। वे इन सभी भाषाओं में निपुण थे। वे बीकानेर के राज दरबार की अपनी नौकरी छोड़कर गीता प्रेस में संपादकीय विभाग में काम करने के लिए आए थे। एक दिन, गोस्वामी जी और अन्य लोगों ने भाई जी से शरद पूर्णिमा के दिन श्री कृष्ण के माधुर्य प्रेम रस पर चर्चा करने का अनुरोध किया। तब भाई जी ने बताया कि भले ही उनके पास लीला में प्रवेश करने की शक्ति है, लेकिन उनके लिए दूसरों को यह शक्ति प्रदान करना संभव नहीं है । इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि साधक धीरे-धीरे एकांत साधना में अधिक समय बिताएं ताकि वे अपने पुण्य को बढ़ा सकें। वे सीधे ईश्वर के दर्शन की कामना न करने लगें । उन्होंने लोगों से ईश्वर की 'कृपा' या आशीर्वाद पर पूर्ण विश्वास रखने और ईश्वर का नाम जपते रहने का आग्रह किया।

When one sets on a spiritual path and diligently continues with sadhana, he or she will definitely get the fruits even though one does not realise it. It is a subtle process. If one is de-voting too much time to one's work or business and to worldly affairs and maintenance of fami-ly, it is difficult to focus energy on sadhana or daily spiritual practice. Satsang and following the teachings and the path set by saints and mahatmas can be beneficial. If the entire life is spent in contemplation of God, the soul will find a better body for continuing with sadhana. The state of consciousness at the time of leaving body will determine the fate of soul. As long as the stock of negative karma is high and spiritual efforts are low, spiritual progress will not be fast. So Poojya Bhai Ji asked the people who had gathered there to meet around Brahma Muhurta for 'ekaant dhyaan' for contemplation on God.

जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग पर चलता है और गंभीरता से अपनी साधना को जारी रखता है, तो उसे भले ही उसे इसका एहसास न हो पर उसे निश्चित रूप से फल मिलेगा । यह एक सूक्ष्म प्रक्रिया है। यदि कोई व्यक्ति अपने कार्य, व्यापार या पारिवारिक जिम्मेदारियों में अत्यधिक समय व्यतीत करता है, तो साधना या दैनिक आध्यात्मिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना कठिन हो जाता है। ऐसे में सत्संग और संत-महात्माओं द्वारा दिखाए गए मार्ग और उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं का पालन करना लाभकारी हो सकता है। यदि पूरा जीवन ईश्वर के ध्यान में बिताया जाए, तो साधना जारी रखने के लिए, आत्मा को एक उत्तम शरीर मिलेगा । शरीर त्यागते समय, चेतना की अवस्था, आत्मा के भविष्य का निर्धारण करेगी । जब तक नकारात्मक कर्मों का भंडार अधिक और आध्यात्मिक प्रयास कम हैं, तब तक आध्यात्मिक प्रगति तीव्र नहीं होगी। इसीलिए, पूज्य भाईजी ने एकांत ध्यान द्वारा ईश्वर का चिंतन करने के लिए वहां एकत्रित लोगों से ब्रह्म मुहूर्त में मिलने का आग्रह किया।

Poojya Bhai Ji showed the easiest and surest path for achieving spiritual goals. One should be

able to control anger and lust and practice meditation in silence. The fastest way to grow in sadhana is to leave everything to God and avoid materialistic desires. The desire for communion with God should be the highest goal of life. Be cheerful always and depend totally on God as the sole benefactor. Dhyaan and Bhajan are to be practiced diligently.

पूज्य भाईजी ने आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सबसे सरल और निश्चित मार्ग दिखाया। उन्होंने कहा कि क्रोध और कामवासना पर नियंत्रण रखना चाहिए और मौन अवस्था में साधना करनी चाहिए। साधना में प्रगति का सबसे तीव्र उपाय है सब कुछ ईश्वर पर छोड़ देना और भौतिक इच्छाओं से दूर रहना। ईश्वर से मिलन की इच्छा को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए। हमेशा प्रसन्नचित्त रहें और ईश्वर पर पूर्ण रूप से निर्भर रहें, जो कि हमारे एकमात्र सच्चे हितैषी हैं। यहाँ ध्यान और भजन का निष्ठा से अभ्यास करना आवश्यक है।

Develop a personal relationship with God and serve Him accordingly as a friend, mother or a lover would. The only religion to follow is to surrender to God totally. The love of the Gopis is the highest surrender. People used to write their questions on a piece of paper and send them during pravachans. Poojya Bhai Ji Hanuman Prasad Poddar was revered as a saint who showed the right path to the general masses who found a very noble and a genuine seer who could clear their doubts and show them the path of least be, light and devotion towards God. Poojya Bhai Ji had got the Darshan of God at the age of 35. He was very famous all over the country as the editor of ' Kalyan '. People used to write letters to him and many used to come to meet him personally. The answers were printed and published later for everyone to go through and reminisce and to follow in their lives.

ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित करें और उनकी वैसी ही सेवा करें जैसे आप एक मित्र, माता या प्रेमी की करते हैं। ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण ही पालन करने योग्य एकमात्र धर्म है। उनके प्रति गोपियों का प्रेम सर्वोच्च समर्पण है। लोग अपने प्रश्न एक कागज के टुकड़े पर लिखते और उसे प्रवचनों के दौरान पूज्य भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार को भेजते थे। लोग उनका आदर एक ऐसे संत के रूप में करते थे जिन्होंने सामान्य जन को सही मार्ग दिखाया। उनके रूप में लोगों को एक बहुत ही महान और सच्चे सिद्ध पुरुष मिले। एक ऐसे सिद्ध पुरुष जो उनकी शंकाओं को दूर कर, उन्हें ईश्वर की ओर ले जाने वाले प्रेम, प्रकाश और भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते थे। पूज्य भाईजी को 35 वर्ष की आयु में ईश्वर के दर्शन प्राप्त हुए थे। वे पूरे देश में 'कल्याण' पत्रिका के संपादक के रूप में प्रसिद्ध थे। लोग उन्हें पत्र लिखते और कई उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने आते। उनके उत्तर बाद में प्रकाशित किए जाते थे, ताकि सभी उन्हें पढ़ सकें, उन पर अपने विचार कर सकें और अपने जीवन में उनका अनुसरण कर सकें।

The following excerpts throw light on various topics Poojya Bhai Ji answered for the benefit of everyone. The ultimate happiness, harmony and eternal joy that each one of us wishes for in life cannot be expected from worldly pursuits because material enjoyments are pithless and temporary. Material objects and sensual enjoyments give happiness when possessed but leave

a trail of bitterness when lost. It creates discontentment and disillusionment. All actions should be dedicated to God and the mind and senses should be engaged in service of God. One should work for the benefit of mankind selflessly as a work of God for the love of God.

निम्नलिखित अंश, विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालते हैं। उन सभी विषयों पर, जिन पर पूज्य भाईजी ने सभी को लाभान्वित करने के लिए उत्तर दिए थे । प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में जिस परम सुख, समरसता और अनन्त आनंद की आकांक्षा करता है, उसे सांसारिक गतिविधियों और भौतिक सुखों से प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये क्षणिक और सारहीन होते हैं। भौतिक वस्तुएं और कामुक सुख, पास होने पर आनंद देते हैं, परंतु जब वे नहीं रहते तब वे अपने पीछे छोड़ जाते हैं कड़वी निशानियां । यह असंतोष और मोहभंग की स्थिति उत्पन्न करता है। इसलिए, सभी कर्म ईश्वर को समर्पित करने चाहिए, और मन और इंद्रियों को उनकी सेवा में लगाना चाहिए। मानवता के कल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करना चाहिए। इसे ईश्वर के प्रति प्रेम और सेवा के रूप में देखना चाहिए ।

In his pravachans and responses to queries of devotees, Poojya Hanuman Prasad Poddar Ji has explained and preached about how one should mould their life for spiritual progress and make life sublime, about the issue of birth and death and why humans suffer from happiness and sorrow due to 'prarabdha' or accumulated karma of previous lifetimes. Poojya Bhai Ji explains that fate and destiny is determined by intelligence. So intelligence should be purified consciously through Satsangs, study of scriptures and by channelizing one's thoughts and disciplining the mind. It is usually seen that crafty, crooked and unscrupulous people lead very happy life full of sensual enjoyments while people who lead sattvic, pious and simple lives usually suffer the most in the material world. For both sets of people, they are experiencing their prarabdha karmas and not karmas of current lifetime. Whether any individual performs sinful actions or meritorious deeds, according to the quality of his consciousness and how much spiritual advancement one has made.

पूज्य श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने अपने प्रवचनों और भक्तों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में समझाया कि मनुष्य को अपनी आध्यात्मिक प्रगति के लिए जीवन को किस प्रकार ढालना चाहिए और उसे उत्कृष्ट कैसे बनाया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने जन्म और मृत्यु के विषयों पर भी चर्चा की, जैसे कि मनुष्य अपने पिछले जन्मों के संचित कर्मों के कारण सुख और दुःख का अनुभव क्यों करता है। पूज्य भाई जी यह समझाते हैं कि भाग्य और नियति, बुद्धि द्वारा निर्धारित होते हैं। इसलिए मनुष्य को सत्संग, शास्त्रों के अध्ययन, विचारों को सही दिशा देकर और मन को अनुशासित करके, अपनी बुद्धि को शुद्ध करना चाहिए। आमतौर पर यह देखा गया है कि चालाक, कुटिल और बेईमान लोग कामुक सुखों से भरपूर एक अत्यंत खुशहाल जीवन जीते हैं, जबकि सात्विक, पवित्र और सरल जीवन जीने वाले लोग आमतौर पर भौतिक संसार में सबसे ज्यादा कष्ट सहते हैं। दोनों प्रकार के लोग, अपने प्रारब्ध कर्मफल का अनुभव कर रहे हैं न कि वर्तमान जीवनकाल के अपने कर्मफल का । कोई भी व्यक्ति चाहे पाप करता हो या पुण्य, यह उसकी चेतना की गुणवत्ता और उसकी आध्यात्मिक उन्नति के अनुसार ही होता है।

When the jeeva thinks that he is himself the doer and takes credit for his actions without being grateful to God, it is highly inappropriate. If the jeeva realises that God is the cause of everything including our karma, it will not lead to bondage because it will not lead to karma because everything is attributed to God. If actions and daily activities are performed by surrendering mind and senses to God with a clean and clear conscience, it becomes an offering to God and will not give rise to unwanted karmic reactions. One who is attracted towards or addicted to sense enjoyments is bound to create negative karma for himself. Dwelling on sensual enjoyments and pursuing them leads to ruin of the individual. Performing bhajan during the entire lifetime is a preparation for the time of death for remembering God at the end of life. Employ the mind in thinking and contemplating about God all the time rather than letting the mind run after materialistic tendencies.

जीव का यह सोचना कि वही स्वयं कर्ता है और बिना ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त किए, अपने कार्यों का श्रेय लेना, अत्यंत अनुचित है। यदि जीव यह समझ जाए कि सब कुछ के मूल कारण ईश्वर ही हैं, यहाँ तक की हमारे कर्मों के भी, तो इससे किसी भौतिक बंधन की उत्पत्ति नहीं होगी। इसका कारण यह है कि सब कुछ ईश्वर को समर्पित माना जाएगा और किसी नए कर्म की उत्पत्ति नहीं होगी । यदि मन और इंद्रियों को ईश्वर के प्रति समर्पित करके, स्वच्छ और निर्मल चित्त के साथ दैनिक कार्यों को किया जाए, तो वे ईश्वर को अर्पित हो जाते हैं और अवांछित कर्मफल उत्पन्न नहीं होते । उन्होंने समझाया कि इंद्रिय सुखों की ओर आकर्षित होने या उनमें आसक्त रहने वाला मनुष्य स्वयं के लिए नकारात्मक कर्म उत्पन्न करता है। इंद्रिय सुखों को भोगने और उन्हें प्राप्त करने के प्रयास, उसे पतन की ओर ले जाते हैं। पूरे जीवनकाल में भजन करना, जीवन के अंतिम क्षणों में ईश्वर का समरण करने की तैयारी है। मन को भौतिकवादी प्रवृत्तियों के पीछे भागने की बजाय, उसे हर समय ईश्वर के बारे में सोचने और उनका चिंतन करने में लगाएं।

Attachment, ignorance and a deep longing for material sense enjoyments can be very detrimental for the jeeva as it fuels egoistical tendencies and leads to a strong material bondage. It requires a lot of time and energy to forge material relations but there is still no guarantee that these people or circumstances may last forever and give happiness and love. But connection with God is very easy and no special effort is required. One should possess a deep desire and longing to connect with God. It is very easy to enter the spiritual space because God is residing in the heart of every living being as ' Paramatma '. It is very easy for human beings to realize God. Material existence is inert matter while the individual soul and Paramatma are eternal, conscious and ever existing. They are never destroyed or they can never be destroyed at any given point of existence. Energy and matter can be changed from one form to another but they cannot be destroyed.

आसक्ति, अज्ञानता और भौतिक इंद्रिय सुखों की गहरी लालसा, जीव के लिए अत्यंत हानिकारक हो सकती है, क्योंकि यह अहंकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देती है और एक मजबूत भौतिक बंधन, यानी सांसारिक बंधन की ओर उसे ले जाती है। इन

संबंधों को बनाने के लिए बहुत अधिक समय और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसके बावजूद, इस बात की कोई गारंटी नहीं होती कि ये सम्बन्ध या परिस्थितियाँ हमेशा टिकेंगी या हमें सुख और प्रेम देंगी । लेकिन ईश्वर से जुड़ाव बहुत सरल है। इसके लिए कोई विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य के भीतर ईश्वर से जुड़ने की गहरी इच्छा और लालसा होनी चाहिए। ईश्वर हर जीव के हृदय में 'परमात्मा' के रूप में विराजमान हैं। इसलिए आध्यात्मिकता में प्रवेश करना और ईश्वर को अनुभव करना अत्यंत सहज है। भौतिक अस्तित्व जड़ पदार्थ है, जबकि आत्मा और परमात्मा शाश्वत हैं। ये सचेतन हैं और सदैव विद्यमान रहते हैं। उन्हें कभी भी नष्ट नहीं किया जा सकता। ऊर्जा और पदार्थ को एक रूप से दूसरे रूप में बदला जा सकता है, लेकिन उनका पूर्णतः विनाश असंभव है।

Pad Ratnakar is a very precious and valuable collection of padas or devotional poems composed by Poojya Bhai Ji which is a reservoir of Bhakti and pure love towards Shree Radha Krishna. In one of his discourses, he said that his first, last and latest realisation was that any jeeva who wishes for his or her greatest and highest good should take shelter of Harinaam. One can follow any other sadhanas too but even if anyone is unable to perform any sadhanas, one should constantly chant God's name with his tongue. Poojya Bhai Ji advised everyone to take a vow of Bhagwan naam jap and never to break the vow under any circumstances. Whoever takes the vow of Harinaam and keeps on chanting the names of Shree Radha Krishna during their entire lifetime can be sure of attaining God's love.

पद-रत्नाकर एक अत्यंत मूल्यवान और अमूल्य संग्रह है। इसमें पूज्य भाई जी द्वारा रचित पदों, या भक्ति से ओतप्रोत कविताएँ संकलित हैं। यह संग्रह श्री राधा-कृष्ण के प्रति भक्ति और शुद्ध प्रेम का विशाल भंडार है। अपने एक प्रवचन में पूज्य भाई जी ने कहा था कि उनका प्रथम, अंतिम और नवीनतम अनुभव यही है कि जो भी जीव अपने परम और श्रेष्ठ कल्याण की कामना करता है, उसे हरिनाम की शरण में जाना चाहिए। साधना का कोई अन्य मार्ग भी अपनाया जा सकता है, लेकिन यदि कोई साधना करने में असमर्थ हो, तो उसे भी अपनी जिह्वा से निरंतर ईश्वर के नाम का जाप करना चाहिए । पूज्य भाई जी ने सभी को ईश्वर का नाम जाप करने का संकल्प लेने, और किसी भी परिस्थिति में इस संकल्प को न तोड़ने का परामर्श दिया था। जो भी हरिनाम का संकल्प लेता है और पूरे जीवन श्री राधा-कृष्ण के नाम का जाप करता रहता है, वह निश्चित रूप से ईश्वर के प्रेम को प्राप्त कर सकता है।

One has to surrender to God and follow the vow religiously with love and devotion. God will honour the vow and help the jeeva on his / her journey towards going back to Godhead. Just as fire has the natural power to burn and purify, God's name has the power to burn our sins and our material attachments. The greatest sins are burnt by Harinaam. Harinaam is the best practice for destroying all previous accumulated sins. The most dangerous sins like back stabbing of friends, dacoity, murders, brahma hatya, murder of women, King, father, Gau hatya paap are dissolved by Harinaam. But one should realise their sins and mistakes and resolve never to repeat such abominable sins. Harinaam kindles the flame or light of knowledge in the heart after destroying sins and the flames of knowledge inspire love of Godhead in the heart of

the devotees.

मनुष्य को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए और इस संकल्प को प्रेम और भक्ति के साथ श्रद्धापूर्वक निभाना चाहिए। ईश्वर इस संकल्प का सम्मान करेंगे और जीव को परम धाम की ओर अग्रसर होने की यात्रा में सहायता प्रदान करेंगे । जिस प्रकार अग्नि में, चीजों को जलाने और उन्हें शुद्ध करने की स्वाभाविक प्रवृति होती है, उसी प्रकार ईश्वर के नाम में हमारे पापों और सांसारिक आसक्तियों को भस्म की शक्ति होती है। हरिनाम सबसे घोर पापों को भी नष्ट कर देता है। इस तरह, पिछले सभी संचित पापों को नष्ट करने के लिए हरिनाम एक सर्वोत्तम मार्ग है। मित्रों से विश्वासघात, डकैती, हत्या, ब्रह्महत्या, गौहत्या, महिलाओं, राजा, या पिता की हत्या जैसे घोर पाप, हरिनाम से नष्ट हो जाते हैं। लेकिन व्यक्ति को अपने पापों और गलतियों का आभास होना चाहिए और ऐसे घृणित पापों को कभी नहीं दोहराने का संकल्प लेना चाहिए। हरिनाम पापों का नाश करके, हृदय में ज्ञान की लौ प्रज्वलित करता है और ज्ञान की ज्योति भक्तों के हृदय में भगवत् प्रेम उत्पन्न करती है।

Poojya Bhai Ji explained the importance of pilgrimage to holy places and Satsangs with holy men for karma cleansing and purification of mind and senses. Controlling the senses, compassion towards all forms of life, charity, contentment and happiness, austerity are 'Manas tirthas'. Uplifting thought processes and healing the mind is very important. The 'Jangam tirthas ' are the saints and mahatmas and the Brahmanas who follow the right dharmic path. The holy rivers, pilgrimage sites and holy places like ashrams and bhajan stahlis of saints and mahatmas are 'sthavar tirthas' or immovable tirthas or immovable places of pilgrimage one should visit. The Char Dham, Sapta Puris, Dwadash Jyotirlingas and other holy sites and rivers like Ganga, Yamuna, Saraswati, Godavari, Gomati, Narmada, Sarayu, Kaveri, Mandakini, Krishna and Ganga Sagar have the power to cleanse the sins and destroy the sins and they have the power to grant wishes and salvation. The goal of tirtha yatras should be cleansing of conscience and Bhagvad prapti.

पूज्य भाई जी ने पवित्र स्थलों की तीर्थ यात्रा और संतों के साथ सत्संग का महत्व समझाया, जो कर्मों की शुद्धि, मन की पवित्रता और इंद्रियों के नियंत्रण के लिए आवश्यक है । इंद्रियों पर नियंत्रण, सभी जीवों के प्रति करुणा, दान, संतोष, आनंद, और तपस्या – ये सब 'मानस तीर्थ' कहलाते हैं। विचारों का उत्थान और मन की शुद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । जो संत, महात्मा और ब्राह्मण, धर्म के सही मार्ग का पालन करते हैं, वे सब 'जंगम तीर्थ' कहलाते हैं । पवित्र नदियाँ, तीर्थ स्थल और पवित्र स्थान, जैसे संतों और महात्माओं के आश्रम और भजन स्थली, 'स्थावर तीर्थ' कहलाते हैं, यानी अचल तीर्थ स्थल या तीर्थ करने के अचल स्थान, जिनका दर्शन हर किसी को अवश्य करना चाहिए। चार धाम, सप्तपुरी, द्वादश ज्योतिर्लिंग और अन्य पवित्र स्थल तथा नदियाँ जैसे गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, गोमती, नर्मदा, सरयु, कावेरी,

मंदाकिनी, कृष्णा और गंगासागर पापों को शुद्ध करने और नष्ट करने की शक्ति रखते हैं। इनमें इच्छाओं को पूरा करने और मोक्ष की प्राप्ति कराने की भी शक्ति है। तीर्थ यात्रा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए-मन की शुद्धि और भगवत प्राप्ति ।

Gau matas should be well cared for and respected. Gau Raksha is the duty of mankind. Go daan is the ultimate daan for getting rid of one's sins and troubles in life. Whatever is given in charity for Gau seva gives infinite auspicious results. Cow slaughter is an abominable sin and it should be banned totally. The sins and merits mentioned in our shastras are for discouraging one from falling down into the deep pit of ignorance and wretched existence. Torturing any animal or any human being in name of God or self-gratification is despicable and against the will of God. Most people just think of gratification of senses and commit very serious and heinous crimes against humanity and all forms of life. But in the process, they are totally ignorant about the fact that they have to repay for their sins in equal or more measures later. About the topic of death, Poojya Bhai Ji said that the jeeva suffers in hell or 'Narak' for the various sins committed during one's lifetime.

गौ माताओं की अच्छी देखभाल करनी चाहिए और उन्हें सम्मान देना चाहिए। गौरक्षा मनुष्य का परम उत्तरदायित्व है। वहीं, गोदान पापों और जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति पाने के लिए किया गया सर्वोच्च दान है। गौ सेवा के लिए जो कुछ भी दान में दिया जाता है वह अनंत शुभ फल देता है। गोहत्या एक घृणित पाप है और इस पर पूर्णत: प्रतिबंध लगाना चाहिए। हमारे शास्त्रों में उल्लेखित पाप और पुण्य, मनुष्य को अज्ञानता और नीचता की गहरी खाई में गिरने से हतोत्साहित करने के लिए हैं। ईश्वर के नाम पर या आत्मिक संतोष के लिए किसी भी प्राणी या मनुष्य को यातना देना घृणित है और ईश्वर की इच्छाओं के विपरीत है। अधिकांश लोग अपनी इंद्रिय सुख की प्राप्ति के लिए मानवता और सभी जीवित प्राणियों के जीवित प्राणियों के प्रति गंभीर और घृणास्पद अपराध करते हैं। लेकिन इस प्रक्रिया में, वे इस तथ्य से पूरी तरह अनभिज्ञ रहते हैं कि भविष्य में उन्हें अपने पापों का दंड, समान या अधिक मात्रा में अवश्य भुगतना पड़ेगा। मृत्यु के विषय में पूज्य भाई जी ने कहा कि जीव अपने जीवनकाल में किए गए विभिन्न पापों के कारण नरक में दु:ख भोगता है।

Poojya Bhai Ji explained about the importance of ' prarthana ' or the power of prayers in his pravachans or discourses. Establishing an intimate relationship with total faith in God is prarthana or prayer. Communion with God in prayer is prarthana and prayers bring us closer to God and establish a strong bond between the soul and the Supersoul. Aligning our desires with the will of God leads to greater dependence on God as the ultimate benefactor of the soul. If our

prayers are sincere, all impediments and hurdles on the life path are automatically removed. One should pray to God without any sense of ego and feelings of authority. Prayer is not a bargain. If prayers are made with love, faith and devotion without deceptive tendency, they are accepted by God. Sincere prayers or prarthana have the power to heal on mind, body and spirit levels. As one establishes a deeper connection with God, all lower desires and expectations start diminishing.

पूज्य भाई जी ने अपने प्रवचनों में 'प्रार्थना' या प्रार्थना की शक्ति के महत्व को समझाया है । उन्होंने कहा कि प्रार्थना का अर्थ है परमात्मा के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ एक गहरा संबंध स्थापित करना। प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर से सीधा संवाद होता है, जो आत्मा और परमात्मा के बीच एक अटूट बंधन को मजबूत करता है। जब हमारी इच्छाएँ, ईश्वर की इच्छा के अनुरूप हो जाती हैं, तो आत्मा के परम हितैषी के रूप में, ईश्वर पर हम अधिक निर्भर हो जाते हैं। इस प्रकार, प्रार्थना न केवल हमें ईश्वर के निकट लाती है, बल्कि हमें उनके संरक्षण और मार्गदर्शन के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना भी सिखाती है। अगर हमारी प्रार्थनाओं में सच्चाई होगी, तो जीवन के पथ पर आने वाली सभी बाधाएँ और कठिनाइयाँ स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी। किसी भी प्रकार के अहंकार या अधिकार की भावना से मुक्त होकर ईश्वर की प्राथना करनी चाहिए। प्रार्थना में कोई मोल-भाव नहीं होता है । अगर बिना किसी छल या कपट के, सच्चे प्रेम, विश्वास और भक्ति के साथ प्रार्थनाएँ की जाएं, तो ईश्वर उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। सच्ची प्राथनाओं में मन, शरीर और आत्मा को शुद्ध करने की शक्ति होती है । जैसे-जैसे कोई ईश्वर के साथ गहरा संबंध स्थापित करता है, वैसे-वैसे उसकी निम्नस्तरीय इच्छाएँ और सांसारिक अपेक्षाएँ कम होने लगती हैं।

Poojya Bhai Ji explained that everyone should be careful about their karma. No one can share karma of others. If someone does anything good for others without expectations in return, these karmas will never produce negative results. God will take care if there are any indiscrepancies. If anyone performs karma with a view to gain material benefits, then one may complete his duties towards one's family and near and dear ones. But if karma is not dedicated to God, whatever negative karma is acquired by doing karma will return as paap karma of sins in upcoming lifetimes. Do everything as an offering to Shree Radha Krishna only. In his discourses, Poojya Bhai Ji touched the topics ranging from karma, dharma, duty and so on and also the topic of death and after life. Death means separation of the soul from the physical body. The soul is eternal and never dies. Death is only for the physical body composed of 5 elements - air, water, earth, fire, ether.

पूज्य भाई जी ने समझाया है कि हर किसी को अपने कर्मों के प्रति सतर्क रहना चाहिए। कोई भी व्यक्ति दूसरों का कर्म साझा नहीं कर सकता। यदि कोई प्रतिफल की कामना किए बिना दूसरों की भलाई करता है, तो ऐसे कर्म कभी नकारात्मक परिणाम उत्पन्न नहीं करेंगे। अगर कोई अवज्ञा होगी तो ईश्वर आपका ध्यान रखेंगे। यदि कोई व्यक्ति भौतिक लाभ की कामना करते हुए कर्म करता है, तो वह अपने परिवार व प्रियजनों के प्रति कर्तव्यों को पूरा कर सकता है। लेकिन यदि कर्म, ईश्वर को समर्पित नहीं किए जाते, तो उन कर्मों से उत्पन्न नकारात्मक परिणाम, आगामी जन्मों में पाप कर्म के रूप में लौटकर आते हैं। इसलिए हर कर्म को श्री राधा-कृष्ण के चरणों में समर्पित करके ही करें। अपने प्रवचनों में, पूज्य भाई जी ने कर्म, धर्म, कर्तव्यों के विषयों के साथ-साथ मृत्यु और परलोक के विषय पर भी प्रकाश डाला। मृत्यु का अर्थ आत्मा का शरीर से अलग होना है। आत्मा शाश्वत और अमर है। मृत्यु केवल शरीर के लिए है, जो पंचतत्त्वों यानी वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि और आकाश से बना है।

When a new body is created for the jeeva, the jeevatma leaves the previous body and prepares for the new body but has to traverse through heaven, hell or pitru lokas for levelling the karma phalas. The physical body is made of earth element, the bodies of Gods are light bodies and the bodies of pitrus are made of wind. The jeevas which go to hell or ' Naraka ' are given the wind body where the jeeva experiences all the traumas but does not die. The jeevas going to Pitru lokas also possess wind bodies but they don't suffer from the traumatic experiences like the sinners. The light bodies of the devatas or heavenly beings never face old age and death like the beings on earth. Our ancestors or close friends and relatives who have become pitrus or devas will behave in a similar manner according to their natures when they were living on earth. One should take shelter of ' Harinaam ' or the holy names of God while living on this earth.

जब किसी जीव के लिए नए शरीर का निर्माण होता है तो जीवात्मा पिछले शरीर को छोड़कर नए शरीर के लिए तैयार होती है, लेकिन इसके लिए उसे स्वर्ग, नरक या पितृलोक जैसे स्थानों से होकर गुजरना पड़ता है ताकि उसके कर्मों के फल संतुलित हो सकें । भौतिक शरीर पंचतत्वों में से पृथ्वी तत्व से बना है, देवताओं के शरीर प्रकाश से बने होते हैं, और पितृों के शरीर वायु तत्व से बने होते हैं। जो जीव नरक में जाते हैं, उन्हें वायु शरीर दिया जाता है जहाँ वे सभी दुखों का अनुभव करते हैं लेकिन मरते नहीं। पितृलोक में जाने वाले जीव भी वायु शरीर धारण करते हैं, लेकिन उन्हें पापियों की तरह तीव्र दुःखों का सामना नहीं करना पड़ता। देवताओं के प्रकाश से बने शरीर, पृथ्वी पर रहने वाले जीवों की तरह वृद्धावस्था और मृत्यु का सामना नहीं करते । हमारे पूर्वज या नजदीकी मित्र और संबंधी, जो पितृों या देवों के स्वरूप में आए हैं, अपने स्वभाव के अनुरूप वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा वो तब करते थे जब वो पृथ्वी पर रहा करते थे। मनुष्य को इस पृथ्वी पर रहते हुए हरि नाम यानी ईश्वर के पवित्र नामों का आश्रय लेना चाहिए।

The Pitrus derive solace and peace if we perform their Shraddha, tarpan and sing the holy names of God. Bhagwat paath, Shree Ramayan paath, Gayatri purascharan should be performed regularly. There is description of many hells or narakas in our scriptures. But no takes the scriptures seriously and follows the right dharmic and karmic path. The soul lives on even after the physical body perishes. The jeevatma and Paramatma are eternal and Paramatma is the only dear and near friend and well-wisher of the jeeva. So, one should strive to go back to Godhead, the eternal home of the jeeva.

पितृों को शांति और संतोष तब मिलता है जब हम उनका श्राद्ध व तर्पण करते हैं और ईश्वर के पवित्र नामों के गीत गाते हैं। भगवत पाठ, श्रीरामायण पाठ और गायत्री पुराश्चरण नियमित रूप से किए जाने चाहिए। हमारे शास्त्रों में नरकों के विभिन्न विवरण मिलते हैं, लेकिन कोई भी इन शास्त्रों को गंभीरता से नहीं लेता और सही धर्मिक तथा कर्मिक पथ का पालन नहीं करता। आत्मा भौतिक शरीर के नष्ट होने के बाद भी जीवित रहती है। जीवात्मा और परमात्मा दोनों शाश्वत हैं। परमात्मा ही जीवात्मा का सच्चा मित्र और शुभचिंतक है। इसलिए, व्यक्ति को जीव के शाश्वत निवास-स्थान यानी ईश्वर के पास लौटने का प्रयास करना चाहिए।

Poojya Bhai Ji was a spiritual leader and a social reformer too. He brought about a spiritual revolution in the country which was under the grip of British rule. Indians were losing their own cultural and spiritual heritage and their sense of identity because the British were imposing a lot of rules and regulations which were anti Sanatan dharma and were torturing and demeaning the general public and the freedom fighters and everyone who they felt was a potential threat to their rule. Poojya Bhai Ji was a pioneer in upliftment of the underprivileged sections of society and giving them the opportunity and access to find their spiritual path and their path towards knowledge and salvation through the Gita Press publications. All stotras, mantras, ashtakams, stutis and Bhagavad Gita were published in form of small booklets in pocket size editions which were easy to carry and people could recite whenever they got time.

पूज्य भाई जी एक आध्यात्मिक नेता होने के साथ-साथ एक सामाज सुधारक भी थे। उन्होंने उस समय देश में आध्यात्मिक क्रांति का शंखनाद किया, जब भारत ब्रिटिश शासन के चंगुल में जकड़ा हुआ था। भारतीय अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर ही नहीं बल्कि अपनी पहचान भी खोते जा रहे थे। ऐसा इसलिए हो रहा था क्योंकि ब्रिटिश सरकार ऐसे कई नियम और कानून लागू कर रही थी, जो सनातन धर्म के विरुद्ध थे। जिसे भी वे अपने शासन के लिए संभावित संकट मानती, उसे प्रताड़ित और अपमानित करती, फिर चाहे वो स्वतंत्रता सेनानी हो या फिर आम जनता। पूज्य भाई जी ने समाज के वंचित वर्गों के उत्थान में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने गीता प्रेस के माध्यम से उन्हें आध्यात्म व मोक्ष के मार्ग तक पहुंचने का एक मौका दिया। पूज्य भाई जी ने भगवद गीता सहित सभी स्तोत्रों, मंत्रों, अष्टकमों, और स्तुतियों को पॉकेट आकार की पुस्तिकाओं में प्रकाशित किया ताकि उन्हें अपने साथ कहीं भी लेकर जाना आसान हो जाए और लोग अपनी सुविधानुसार उनका पाठ कर पाएं।

He taught about Janma, Karma and Dharma for humans and the proper way of leading life the highest and greatest good on all levels of existence. Gita paath, listening to the Upanishads and the Puranas and following the instructions for purifying the self and for self-retrospection is recommended. Lord Krishna has explained in the Bhagavad Geeta that one should follow one's karma and dharma with total dedication and offer the fruits of karma to God. Krishna has said in the Bhagavad Gita that He is the creator of Varnashram dharma. The karmas of previous lifetimes lead to birth of the individual in a particular Varna for upliftment of the soul by advancing on the spiritual path. This world is a learning ground for self-improvement in every lifetime to move on towards salvation. But it is not easy to manoeuvre through all the trials and tribulations of material existence and follow the path of spiritual advancement.

उन्होंने जन्म, कर्म और धर्म का पाठ पढ़ाया। साथ ही जीवन को सर्वोच्च और महानतम उद्देश्य के साथ, सही ढंग से जीने का मार्ग बताया। गीता पाठ, उपनिषदों और पुराणों को सुनना, आत्मशुद्धि के लिए दिए गए निर्देशों का पालन करना, और आत्मचिंतन करना, अत्यंत आवश्यक बताया। भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में समझाया है कि मनुष्य को अपने कर्म और धर्म को पूर्ण समर्पण के साथ करना चाहिए, और अपने कर्मफल को, ईश्वर को समर्पित कर देना चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में यह भी कहा है कि उन्होंने ही वर्णाश्रम धर्म की रचना की है। आध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर होकर आत्मा के उत्थान के लिए, हमारे पूर्व जन्मों के कर्म ही, हमें अगले जन्म में किसी विशेष वर्ण में जन्म दिलाते हैं। यह संसार प्रत्येक जन्म में आत्म-सुधार के लिए एक शिक्षास्थल है, ताकि हम मोक्ष की ओर बढ़ सकें, लेकिन भौतिक अस्तित्व के सभी संघर्षों और परीक्षाओं को पार करके आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर चलना आसान नहीं।

Ishwara is the substratum of all existence and the creator, sustainer and destroyer of the universes. All the scriptures and the teachings of Mahatmas, Gurus and Mahapurushas are the proof of existence of Ishwara as being omnipotent, omnipresent and the sole controller of everything that exists. He is present as the Supersoul in all material bodies with the individual soul and pervades throughout all His creations. He can possess any form and can be formless too. No one can be equal to Him and no one can be greater than Him in any aspect.

ईश्वर समस्त सृष्टि के आधार, रचयिता, पालक और संहारक हैं। सभी धर्मग्रंथ और महात्माओं, गुरुओं और महापुरुषों की शिक्षाएँ, ईश्वर के सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापी होने के प्रमाण हैं। वे प्रमाण हैं इस सत्य के कि जो भी कुछ अस्तित्व में है, उसके एकमात्र नियंत्रक ईश्वर ही हैं । वे सभी भौतिक शरीरों में जीवात्मा के साथ, परमात्मा के रूप में विद्यमान हैं, और साथ ही, अपनी समस्त रचनाओं में व्याप्त हैं। ईश्वर का कोई भी रूप हो सकता है, और वे निराकार भी हो सकते हैं। न तो कोई उनके समान है और न ही कोई उनसे श्रेष्ठ।

Poojya Bhai Ji' s pravachans are a source of ultimate knowledge and bliss for the beginners, sadhakas and for anyone who wishes to get relief from the troubles and pitfalls of material existence and aim for getting real happiness from serving God by performing one's own karma and

trying to follow the path to Godhead by following karma yoga, jnana yoga and bhakti yoga. The path is shown by the gurus, seers, saints and Mahapurushas. One who always thinks about Krishna as one's eternal best friend who resides with the individual soul in the cave of the heart as Paramatma or Supersoul and silently watches the karmas of the spirit soul.

पूज्य भाई जी के प्रवचन, साधकों और उन सभी के लिए परम ज्ञान और आनंद का स्रोत हैं, जो भौतिक संसार की परेशानियों और कठिनाइओं से मुक्ति पाना चाहते हैं। साथ ही उनके प्रवचन, उन लोगों के लिए भी परम ज्ञान और आनंद का स्रोत हैं जिनका उद्देश्य अपने कर्मों का पालन करके, ईश्वर से सच्चे आनंद को प्राप्त करना है, और कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का पालन करते हुए ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग पर अग्रसर होना है। इस मार्ग को गुरुओं, ऋषियों, संतों और महापुरुषों ने दिखाया है जो सैदेव श्रीकृष्ण को अपने शाश्वत परम मित्र के रूप में स्मरण करते हैं। एक ऐसा मित्र जो प्रत्येक जीव के हृदय में परमात्मा के रूप में विद्यमान है, और मौन रूप से उनकी आत्मा के कर्मों का निरीक्षण करता है ।

Poojya Bhai Ji explained the definition of Bhakti yoga as surrendering one's mind and intelligence to the lotus feet of Shree Radha Krishna. Naam jap (chanting of the Hare Krishna..... Mahamantra, chanting of holy names , Satsangs, serving the downtrodden and underprivileged sections of society as an act of service towards God and reading, hearing, reciting the leelas or pastimes of God from the scriptures are the easiest ways to keep the mind engaged in loving service of God. ' Sakaam bhakti ' is devotion towards God for wealth, societal relations, status, success and material enjoyments. Some may turn to devotion in times of danger or threat to life, property, status or in tough situations in life.

पूज्य भाई जी ने समझाया कि भक्ति योग का अर्थ होता है श्री राधा-कृष्ण के चरण कमलों में अपने मन और बुद्धि को समर्पित कर देना । नाम जपना (जैसे हरे कृष्णा, महामंत्र और पवित्र नामों का जाप), सत्संग, समाज के दलित और वंचित वर्गों की सेवा, और धर्मग्रंथों के माध्यम से, ईश्वर की लीलाओं का अध्ययन, श्रवण और पठन, मन को ईश्वर की प्रेममयी सेवा में लगाने के सबसे सरल मार्ग हैं। वहीँ धन, सामाजिक सम्बन्ध, प्रतिष्ठा, सफलता और भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए, ईश्वर के प्रति की गई भक्ति, "सकाम भक्ति" है । याद रहे, कुछ लोग भक्ति की ओर केवल तब मुड़ते हैं जब वे अपने जीवन, संपत्ति, या प्रतिष्ठा पर किसी प्रकार के संकट का सामना करते हैं।

Some are just curious to know about this path. Mind, body and spirit should be aligned for bhajan. Singing the holy names of God about His exploits, leelas, greatness and chanting the holy names increases faith, love and affection for Krishna. Establishing a personal relationship with God as a dasa like Hanuman Ji, sakhya or as friends like the Gopas, vatsalya Bhakti like Maa Yashoda or Madhurya Bhakti like the sweet surrender of the Gopis of Vrindavan.

कुछ लोग बस इस मार्ग के बारे में जानने के लिए उत्सुक होते हैं। भजन के लिए मन, शरीर और आत्मा को एक साथ लाना ज़रूरी है । ईश्वर की लीलाओं और महानता का गुणगान करने और पवित्र नामों का जाप करने से कृष्ण के प्रति आस्था,

प्रेम और स्नेह बढ़ता है। उन्होंने भक्तों को यह भी सिखाया कि वे ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित करें, जैसे कि हनुमान जी की तरह दास्य भक्ति, ग्वाल-बालों की तरह सखा भक्ति, माँ यशोदा की तरह वात्सल्य भक्ति, या वृन्दावन की गोपियों की तरह माधुर्य भक्ति।

Realize the presence of God as omnipresent, omniscient and pervading all the universes in each and every atom and as the Supersoul in every living entity. Realize that the same consciousness pervades through the entire creation and pray to Shree Radha Krishna for divine grace. Realization is very important for advancing in Bhakti and for being in state of joy forever because Lord Krishna is Sat - Chit - Ananda. He is eternal, all knowledgeable and joy. All individual souls also possess the same qualities but they are deluded by Maya. Bhakti gives the shakti or power to realize one's relationship with the Supreme Lord Krishna and surrender to Shree Radha Krishna.

ईश्वर की उपस्थिति को सर्वव्यापी, सर्वज्ञ और ब्रह्माण्ड के प्रत्येक अणु में, प्रत्येक जीव में, परमात्मा के रूप में अनुभव करें। इस बात को समझें कि वही चेतना संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त है, और दिव्य कृपा के लिए श्री राधा कृष्ण की भक्ति करें। भक्ति में आगे बढ़ने के लिए और सदैव आनंद की अवस्था में रहने के लिए, ये अनुभव करना बहुत ज़रूरी है क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण तो सत्य-चित्त-आनंदस्वरूप हैं। वे शाश्वत, सर्वज्ञ और आनंदमय हैं। सभी आत्माएँ भी इन्हीं गुणों से युक्त होती हैं, लेकिन वे माया द्वारा भ्रमित हो जाती हैं। पर भक्ति से परम ईश्वर श्रीकृष्ण के साथ अपने शाश्वत संबंध को पहचानने, और श्री राधा-कृष्ण के प्रति स्वयं को समर्पित करने की शक्ति मिलती है।

All things are temporary in this world but the relationship of the soul with Krishna is eternal. Balance material relations for fulfilling karma but be loyal to the source and substratum of all that exists i.e God or Krishna alone. Knowledge of God leads to more closeness and dependence on God. It is a state of fearlessness and unruffled existence.

इस संसार में सब कुछ अस्थायी है, लेकिन श्री कृष्ण के साथ आत्मा का संबंध, शाश्वत है। अपने कर्तव्यों को निभाते हुए भौतिक संबंधों को संतुलित रखें लेकिन साथ ही, जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसके स्रोत और आधार, यानी ईश्वर या केवल श्री कृष्ण के प्रति अपनी निष्ठा को बनाए रखें । ईश्वर का ज्ञान, उनके प्रति अधिक निकटता और निर्भरता की ओर ले जाता है। यह अवस्था, निर्भयता और अविचल अस्तित्व की होती है।

Poojya Bhai Ji Shree Hanuman Prasad Poddar has left an indelible mark on the psyche of Indians, sanatanis and every seeker of truth and spread the knowledge of Ramayan, Mahabharata, Bhagavad Geeta, Puranas, Vedas, Upanishads and all scriptures through his works and through the Gita Press in every household. He was a true selfless karma yogi saint who stayed away from limelight and performed such a colossal task of enlightening the entire mankind. He left his mortal coil on 22 -7 - 1971. His samadhi can be visited in Gita Vatika Gorakhpur. The universe

will be indebted to him and his supreme divine guidance and teachings for eternity.

पूज्य भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने भारतीयों, सनातनियों और सत्य के प्रत्येक साधक के मन पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उन्होने रामायण, महाभारत, भगवद् गीता, पुराण, वेद, उपनिषद और सभी शास्त्रों के ज्ञान को अपने सार्थक प्रयासों और गीता प्रेस के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया । वे एक सच्चे निस्वार्थ कर्मयोगी संत थे, जिन्होंने चकाचौंध से दूर रहकर पूरी मानव जाति को ज्ञान देने का ऐसा महान कार्य किया। वे 22 जुलाई 1971 को अपने नश्वर शरीर को त्याग, हमेशा-हमेशा के लिए हम सब को छोड़ कर चले गए । उनकी समाधि, गीता वाटिका गोरखपुर में आज भी देखी जा सकती है। ब्रह्मांड अनंत काल तक उनके और उनके मार्गदर्शन और शिक्षाओं का ऋणी रहेगा।

----समाप्त----